केले में रोगों की पहचान एवं रोकथाम

डा0 आर0पी0 सिंह
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र, चौकमाफी, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

पर्ण चित्ती रोग या सिगाटोका रोग:

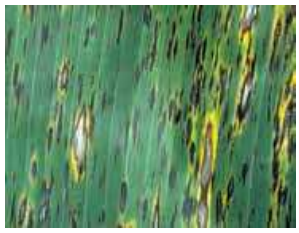

पत्तियों पर हल्के पीले या हरी धारियाँ पाई जाती हैं । बाद में सम्पूर्ण पत्तियाँ झुलसकर लटक जाती हैं । रोग की उग्रता की स्थिति में फलों का रंग हल्का गेरूआ अथवा हल्का नारंगी हो जा ता है ।

रोकथाम:

- पौध अवशेषों को एकत्र करके जला देना चाहिए जिससे रोगजनक के प्राथमिक संक्रमण का स्रोत नष्ट हो जायेगा एवं संक्रमण देरी से होगा ।
- प्रभावित खेत से बीज के लिए कंद एकत्र नहीं करना चाहिए।
- रोग के आरंभिक लक्षण दिखाई देने पर रोग नियंत्रण के लिए उपयुक्त ताम्रयुक्त दवा जैसे कापर आक्सीक्लोराइड 50% की 3 ग्राम/लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। एक हेक्टर के लिए 1000 लीटर द्रव छिड़कना चाहिए। इस घोल में 2 प्रतिशत अलसी का तेल मिश्रित करना चाहिए जिससे केले की चिकनी पत्तियों पर दवा का घोल चिपक सके।

बांची टॉप/ गुच्छशीर्ष रोग:

रोग के लक्षण पौधों पर किसी भी अवस्था में देखे जा सकते हैं। पौधों के शीर्ष पर पत्तियों का गुच्छा बन जाता है इसलिए इस रोग को गुच्छ शीर्ष कहते हैं। रोग के कारण पौधे बौने रह जाते है। रोग का प्राथमिक संक्रमण रोगी अत: भूस्तारी के रोग से होता है तथा द्वितीय संक्रमण रोग वाहन माहूँ कीट द्वारा होता है। जब रोग प्रकोप तरूण पौधों पर होता है। तो उनकी वृद्धि रूक जाती है और ऊंचाई 60 सेमी से अधिक नहीं होता है तथा इन पौधों में फल नहीं लगते है।

रोकथाम:

- प्रकंद एवं अंत: भूस्तारियों का चुनाव स्वस्थ पेड़ों से करना चाहिए।
- रोग सहनशील या प्रतिरोधी प्रजातियों को चाहिए।
- संक्रमित पौधों को निकाल कर नष्ट कर देना चाहिए, जिससे रोग प्रसार को कम किया जा सके ।
- स्वस्थ व रोगी पौधों पर कीटनाशक दवा जैसे- डाईमेंथोएट 30% ई.सी. 1.5-2.0 मिली/लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 3 मिली/10

लीटर पानी या लेम्डासाइहैलोथ्रिन 5% ई.सी. 1 मिली/2लीटर पानी की दर से छिड़काव करना चाहिए।

फल विगलन/एंथ्रक्नोज:

यह बीमारी फंफूद के कारण फैलती है। यह बीमारी केले के पौधे में बढ़वार के समय लगती है। इस बीमारी के लक्षण पौधो की पत्तियों, फूलों एवं फल के छिलके पर छोटे काले गोल धब्बों के रूप मे दिखाई देते हैं। फल पकने पर नीचे का हिस्सा सड़ने लगता है । इस बीमारी का प्रकोप जून से सितम्बर तक अधिक होता है क्योंकि इस समय तापक्रम ज्यादा रहता है।

रोकथाम:

- केले को 3/4 परिपक्वता पर काटना चाहिये।
- बीमारी से पूर्व कापर आक्सीक्लोराइड 50% के 3 ग्राम/लीटर पानी की दर से छिड़काव करना चाहिए ।
- रोग लगने के बाद कार्बेन्डाजिम 50% की 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से छिड़काव करना चाहिए ।

पनामा बिल्ट या उकठा रोगः

यह बीमारी फ्यूजेरियम ऑक्सीस्पोरम नामक फफूंद के द्वारा फेलती है पौधे की पत्तियां मुरझाकर सूखने लगती है केले का पूरा तना फट जाता है प्रारंभ में पत्तियां किनारों से पीली पडती हैं प्रभावित पत्तियां डण्ठल से मुड़ जाती है प्रभावित पीली पत्तियां तने के चारों ओर स्कर्ट की तरह लटकती रहती है आधार पर (निचले भाग) तने का फटना बीमारी का प्रमुख लक्षण है। बैस्कूलर टिश्यू जड़ों और प्रकंद में पीले, लाल एवं भूरे रंग में परिवर्तित हो जाते है पौधा कमजोर हो जाता है। जिसके कारण पुष्पन फलन नहीं होता है। इस बीमारी की फफूंद जमीन में अनुकूल तापक्रम, नमी एवं पी. एच. की स्थिति में लम्बी अवधि तक रहता है।

रोकथाम:

- गन्ना एवं सूरजमुखी के फसल चक्र को अपनाने से बीमारी का प्रकोप कम हो जाता है।
- सकर्स को लगाने के पूर्व कार्बेन्डाजिम 50% के 2 ग्राम/लीटर पानी के घोल में 30 मिनट तक डुबोकर लगाना चाहिए।
- ट्राइकोडर्मा बिरिडी जैविक फफूंद नाशक के 10 ग्राम/लीटर पानी के घोल में सकर्स को 30 मिनट तक उपचारित करके ही लगाना चाहिए तथा 10 ग्राम/लीटर पानी के घोल से जड़ क्षेत्र में तर छिड़काव करना चाहिए।

जीवाणु म्लानि या मोको रोग:

पौधे के हरा का हरा सूख जाता है। प्रभावित पौधों में रोग के कारण शुरू में पौधों की नई पत्तियों का रंग पर्णवृंत के पास पीला सा पड़ जाता है जो बाद में पर्णवृंत से टूट जाता है। इस कारण पौधे की मध्य पत्ती सूख जाती है और मर जाती हैं। रोग के लक्षण संवहन उत्तकों में भी देखे जा सकता हैं। तने को काटकर देखने पर संवहन उत्तक हल्के पीले या गहरे भूरे रंग के दिखाई देते हैं। इस स्थान से हल्के पीले रंग का द्रव स्राव निकलता है । रोगी पौधे में फल लगने के काफी समय बाद रोग लगता है तो ऊपर से फल स्वस्थ दिखाई देते हैं परन्तु गूदा भूरे रंग का हो जाता है। रोग का आक्रमण

किसी भी उम्र के पौधों में हो सकता है।

रोकथाम:

- केले का बगीचा लगाते समय पानी के निकास का अच्छा प्रबन्ध करना चाहिए जिससे रोग प्रकोप की संभावना कम हो जाती है।
- रोगजनक जीवाणु को मिट्टी में नष्ट करने के लिए गर्मी में 2 या 3 बार गहरी जुताई कर खेत खाली छोडऩा चाहिए उसके बाद ही बुवाई करनी चाहिए।
- खेत में गुड़ाई बिल्कुल बंद कर देना चाहिए जिससे पौधों की जड़ में घाव न बन सके और प्रकोप के बढऩे में अंकुश लग सके।
- रोग प्रसार कम करने के लिए प्रभावित पौधों को, जड़ सहित उखाड़कर जला दे ।
- छंटाई के यंत्रों को 5 प्रतिशत फारमालीन या 5 प्रतिशत फिनोल के घोल में आधे मिनट तक डुबोकर निर्जीवी किया जा सकता है। इस तरह रोगजनक जीवाणुओं का रोगी से स्वस्थ पौधों में संचरण रोका जा सकता है।